भारत के ऐतिहासिक स्थलों का पर्यटन में योगदान

डॉ० हितेन्द्र यादव
एसोसिएट प्रोफेसर
इतिहास विभाग
लाजपत राय कॉलेज, साहिबाबाद, गाजियाबाद
ईमेलः dr.hitendra2011@gmail.com

सारांश

भारत एक प्राचीन सभ्यता और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत का धनी देश है, जिसकी जड़ें हजारों वर्षों पुराने इतिहास में गहराई से जुड़ी हैं। सिंधु घाटी की नगर सभ्यता से लेकर मौर्य, गुप्त, चोल, मुगल और ब्रिटिश काल तक, भारत का हर कालखंड अपने पीछे एक समृद्ध ऐतिहासिक धरोहर छोड़ गया है। ये धरोहरें न केवल स्थापत्य और शिल्प की दृष्टि से अद्वित्तीय हैं, बल्कि वे भारतीय संस्कृति, धर्म, कला, सामाजिक संरचना और जीवन शैली के विकास को भी दर्शाती है।

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 10.02.2023
Approved: 21.03.2023

डॉ० हितेन्द्र यादव

भारत के ऐतिहासिक स्थलों का पर्यटन में योगदान

RJPP Oct.22-Mar.23, Vol. XXI, No. I,

pp.097-101
Article No. 13

Online available at *:*
https://anubooks.com/rjpp-2023-vol-xxi-no-1

प्रस्तावना

भारत के ऐतिहासिक स्थल–जैसे ताजमहल, कुतुब मीनार, खजुराहो, अजंता–एलोरा, मांडू, हंपी, चित्तौड़गढ़, फतेहपुर सीकरी और कांचीपुरम–विश्व पर्यटन मानचित्र पर देश की एक अलग ही पहचान स्थापित करते हैं। ये स्थल न केवल भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़ते हैं, बल्कि विश्वभर के पर्यटकों को भारत के विविध और गहन इतिहास से रूबरू कराते हैं।

आज पर्यटन केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह सांस्कृतिक, आर्थिक, सामाजिक और शैक्षणिक विकास का एक सशक्त उपकरण बन चुका है। भारत की ऐतिहासिक धरोहरें इस दिशा में न केवल रोजगार सृजन को स्त्रोत बनती हैं, बल्कि देश की अर्थव्यवस्था को भी गति देती हैं। इसके साथ ही वे सांस्कृतिक संरक्षण और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत की पहचान को भी सुदृढ़ करती हैं।

ऐतिहासिक स्थलों की परिभाषा

ऐसे स्थल जो ऐतिहासिक घटनाओं, शासनकाल, सांस्कृतिक विकास या धार्मिक गतिविधियों से जुड़े हों और जो मानव सभ्यता के विकास की साक्षी हों, उन्हें ऐतिहासिक स्थल कहा जाता है। ये स्थल किले, महल, स्तूप, मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, चर्च, बौद्ध विहार, शिलालेख, गुफाएँ, इत्यादि हो सकते हैं।

भारत के प्रमुख ऐतिहासिक स्थल

भारत के विभिन्न राज्यों में अनेक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थल स्थित है। इनमें से कुछ उल्लेखनीय हैं:

ताजमहल (आगरा):– मुग़ल स्थापत्य कला का अद्वित्तीय उदाहरण, विश्व धरोहर स्थल है।

कुतुब मीनार (दिल्ली):– विश्व की सबसे ऊँची ईंट निर्मित मीनार है।

लाल किला (दिल्ली):– मुग़ल शासकों का मुख्य किला।

बुद्ध गया (बिहार):– गौतम बुद्ध को ज्ञान प्राप्ति का स्थल है।

चित्तौड़गढ़ किला (राजस्थान):– रानी पश्चिमी का बलिदान स्थल है।

अजंता–एलोरा गुफाएँ (महाराष्ट्र):– बौद्ध, जैन एवं हिंदू स्थापत्य कला के अद्भुत उदाहरण है।

हम्पी (कर्नाटक):– विजयनगर साम्राज्य की राजधानी है।

महाबलीपुरम (तमिलनाडु):– पल्लव शासकों द्वारा निर्मित प्रस्तर शिल्प स्थल है।

कोणार्क का सूर्य मंदिर (ओडिशा):– रथ के आकार में बना अद्भुत मंदिर है।

कामाख्या मंदिर (असम):– शक्ति पीठों में से एक पवित्र स्थल है।

पर्यटन में ऐतिहासिक स्थलों का योगदान

भारत में ऐतिहासिक स्थल न केवल देश की गौरवशाली विरासत के प्रतीक हैं, बल्कि आधुनिक अर्थव्यवस्था और समाज के लिए भी अत्यंत उपयोगी है। इन स्थलों का पर्यटन उद्योग में बहुआयामी योगदान है, जिसे निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से विस्तृत किया जा सकता है:

1. आर्थिक योगदान (Economic Contribution)

ऐतिहासिक स्थल देश की आर्थिक समृद्धि में विशेष भूमिका निभाते हैं:–

प्रत्यक्ष राजस्वः ताजमहल, फतेहपुर सीकरी, कुतुब मीनार, हम्पी, खजुराहो जैसे स्थलों से प्रवेश शुल्क, गाइड सेवा शुल्क, और पर्यटक सुविधाओं के माध्यम से करोड़ों रुपये का राजस्व हर वर्ष उत्पन्न होता है।

आसपास के व्यवसायों को बढ़ावाः होटल, लॉज, भोजनालय, हस्तशिल्प बाजार, कैब सेवाएं, टूर कंपनियां, और ट्रैवल एजेंसियाँ इन स्थलों की वजह से समृद्ध होती हैं।

विदेशी मुद्रा अर्जनः विदेशी पर्यटक इन स्थलों को देखने के लिए भारत आते हैं जिससे विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होती है और देश के भुगतान संतुलन को बल मिलता है।

2. रोज़गार सृजन (Employment Generation)

ऐतिहासिक पर्यटन का प्रभाव सीधे रोजगार सृजन पर पड़ता हैः–

स्थानीय युवाओं के लिए अवसरः पर्यटक गाइड, वाहन चालक, रेस्टोरेंट वर्कर, होटल कर्मचारी, सुरक्षाकर्मी और सफाईकर्मी जैसे कार्यों में स्थानीय युवाओं को रोजगार मिलता है।

महिलाओं को अवसरः कई महिलाएं कढ़ाई, चित्रकारी, पेंटिंग, पारंपरिक व्यंजन बनाकर या लोकनृत्य–गायन आदि के माध्य से आय अर्जित करती हैं। कई राज्यों में महिला स्वयं सहायता समूह पर्यटन से जुड़कर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हुए हैं।

3. सांस्कृतिक संरक्षण (Cultural Preservation)

ऐतिहासिक पर्यटन सांस्कृतिक संरक्षण का एक सशक्त माध्यम बनता हैः–

परंपराओं का पुनरुत्थानः जब पर्यटक किसी स्थल पर जाते हैं, तो वहाँ की परंपराए–जैसे लोक–नृत्य, वेशभूषा, पारंपरिक भोजन आदि को देखा जाता है। इससे इन सांस्कृतिक तत्वों को संरक्षित रखने की प्रेरणा मिलती है।

स्थानीय भाषा और रीति–रिवाजों का प्रचारः गाइडिंग और प्रदर्शन के माध्यम से स्थानीय भाषा, बोलियाँ और कहावतें भी पर्यटकों तक पहुँचती हैं, जिससे वे लोकप्रिय होती हैं।

4. अंतर्राष्ट्रीय पहचान (International Recognition)

ऐतिहासिक स्थल भारत को वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठा दिलाते हैंः–

UNESCO विश्व धरोहर स्थलों की सूची में दर्जः भारत के 40 से अधिक स्थल **UNESCO** द्वारा विश्व धरोहर घोषित किए गए हैं, जिनमें अजंता, एलोरा, ताजमहल, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान, महाबलीपुरम आदि प्रमुख हैं।

ब्रांड इंडिया की छविः ऐतिहासिक स्थलों के कारण ही "Incredible India" जैसे अभियानों को विश्व स्तर पर पहचान मिली है, जिससे विदेशी पर्यटकों का आकर्षण बढ़ा है।

5. शैक्षिक लाभ (Educational Benefits)

ऐतिहासिक स्थल शिक्षा और शोध के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण साधन हैंः–

जीवंत इतिहास की प्रयोगशालाः विद्यार्थी और शोधार्थी जब किसी स्थल को प्रत्यक्ष देखते हैं तो वह इतिहास केवल किताबों तक सीमित नहीं रहता। वह अनुभव और दृश्य के रूप में स्मरणीय बन जाता है।

शैक्षणिक यात्राएँः स्कूल–कॉलेज नियमित रूप से ऐतिहासिक स्थलों की यात्राएँ कराते हैं, जिससे छात्रों में जिज्ञासा और शोध क्षमता का विकास होता है।

इतिहास और पुरातत्व का अध्ययनः इन स्थलों पर पुरातत्व, स्थापत्य कला, शिल्प, और प्राचीन लिपियों का अध्ययन संभव होता है, जिससे उच्चस्तरीय शोध को बल मिलता है।

सरकारी प्रयास एवं योजनाएँ

भारत सरकार ने ऐतिहासिक स्थलों के संरक्षण और पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अनेक योजनाएँ प्रारंभ की हैंः–

1. स्वदेश दर्शन योजनाः इस योजना के अंतर्गत भारत के प्रमुख थीम आधारित पर्यटन सर्किट विकसित किए जा रहे हैं।

2. प्रसाद योजनाः धार्मिक पर्यटन स्थलों के विकास के लिए प्रारंभ की गई यह योजना ऐतिहासिक तीर्थ स्थलों को आधुनिक सुविधाओं से जोड़ती है।

3. डिजिटल पहलः सरकार ने 'Incredible India' और 'Dekho Apna Desh' जैसे अभियानों द्वारा डिजिटल माध्यम से भी ऐतिहासिक पर्यटन को बढ़ावा दिया है।

''पर्यटन की चुनौतियाँ''

1. अत्यधिक पर्यटक दबाव से धरोहरों को क्षति

भारत के कई ऐतिहासिक स्थल, जैसे ताजमहल, जयपुर का आमेर किला, खजुराहो और कुतुब मीनार आदि पर प्रतिदिन हजारों पर्यटक आते हैं। इतनी अधिक भीड़ से निम्नलिखित समस्याएँ उत्पन्न होती हैंः–

संरचना को क्षतिः पर्यटक अकसर दीवारों पर नाम उकेरते हैं, फोटो खींचते समय मूर्तियों को छूते हैं या उनके ऊपर चढ़ जाते हैं, जिससे स्थापत्य को क्षति होती है।

आधारभूत संरचनाओं पर भारः पार्किंग, शौचालय, पीने के पानी जैसे सुविधाओं पर दबाव बढ़ता है और साफ–सफाई बनाए रखना मुश्किल होता है।

वातावरणीय प्रभावः अधिक भीड़ से कार्बन डाइऑक्साइड स्तर बढ़ाना है, जिससे संगमरमर जैसे पत्थरों पर प्रतिकूल असर होता है (उदाहरणः ताजमहल का पीला पड़ना)।

2. प्रदूषण एवं रखरखाव की समस्याएँ

पर्यटन स्थलों पर प्रदूषण एक गंभीर समस्या बन चुका हैः–

वायु प्रदूषणः वाहनों से निकलने वाला धुआं और आस–पास के उद्योगों की गैसें पुरातात्त्विक स्थलों को नुकसान पहुँचाती हैं।

जल और भूमि प्रदूषणः प्लास्टिक बोतलें, खाने के पैकेट, और कूड़ा इधर–उधर फेंकने से स्थल गंदे होते हैं।

साफ–सफाई की कमीः स्थानीय निकायों की व्यवस्था अपर्याप्त होती है, जिससे समय पर कचरा निपटान नहीं हो पाता और बदबू व अस्वस्थता फैलती है।

3. स्थानीय समुदायों की उपेक्षा

पर्यटन विकास अक्सर बाहरी एजेंसियों द्वारा किया जाता है, जिससे स्थानीय लोगों को निम्न समस्याएँ होती हैं–

आर्थिक लाभ से वंचितः अधिकांश लाभ होटल मालिकों, टूर ऑपरेटरों और विदेशी एजेंसियों को मिलते हैं, न कि ग्रामीण समुदायों को

संस्कृति पर असरः पर्यटकों की जीवशैली का प्रभाव स्थानीय युवाओं पर पड़ता है और पारंपरिक रीति–रिवाज कमजोर पड़ते हैं।

स्थल से विस्थापनः कई बार पर्यटन सुविधा (जैसे पार्किं, होटल, रेस्टोरेंट) के लिए लोगों को उनके स्थानों से हटा दिया जाता है।

4. पर्यटन स्थलों पर अवैध निर्माण

अनेक ऐतिहासिक स्थलों के आस–पास अवैध निर्माण कार्य हो रहे हैं जो उनके अस्तित्व को खतरे में डालते हैंः–

अवैध होटल और दुकानेंः बिना अनुमति के बनाए गए होटल, रेस्टोरेंट और दुकानें न केवल स्थल की सुंदरता बिगाड़ते हैं बल्कि उसके मूल स्वरूप को भी नष्ट करते हैं।

अस्थायी निर्माण से खतराः सड़क किनारे लगे तंबू, ठेले और पार्किंग स्थानों की अव्यवस्था स्थलों के वातावरण को प्रदूषित करती है।

5. जानकारी की कमी और अपर्याप्त गाइड सेवाएँ

पर्यटकों को स्थलों के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और कलात्मक महत्व की पर्याप्त जानकारी नहीं मिल पातीः–

प्रशिक्षित गाइडों की कमीः कई स्थलों पर प्रशिक्षित, बहुभाषी और प्रमाणित गाइडों की संख्या बहुत कम होती है। इससे पर्यटकों को अनुभव अधूरा लगता है।

सूचना पट्टिकाओं की अनुपलब्धताः कई ऐतिहासिक स्थलों पर सूचनात्मक बोर्ड या डिजिटल कियोस्क नहीं होते, जिससे पर्यटक स्थलों को समझ नहीं पाते।

डिजिटल संसाधनों की कमीः अधिकतर स्थलों पर ऑडियो गाइड, मोबाइल ऐप्स या AR/VR आधारित अनुभव उपलब्ध नहीं हैं, जो आधुनिक पर्यटकों की अपेक्षा है।

समाधान एवं सुझाव

1. संतुलित पर्यटन नीतिः ऐतिहासिक स्थलों पर पर्यटकों की संख्या को नियंत्रित किया जाना चाहिए ताकि स्थल की मूल संरचना सुरक्षित रहे।

2. स्थानीय भागीदारीः पर्यटन योजनाओं में स्थानीय लोगों को भागीदार बनाना चाहिए ताकि वे भी लाभान्वित हो सकें।

3. तकनीकी संरक्षणः AI, AR/VR और डिजिटल आर्काइविंग के माध्यम से धरोहरों का संरक्षण और प्रदर्शन किया जा सकता है।

4. सुनियोजित प्रचारः सोशल मीडिया, वृत्तचित्र, ट्रैवल व्लॉग आदि के माध्यम से स्थलों की जानकारी व्यापक रूप से फैलाई जा सकती है।

5. शिक्षा में समावेशः स्कूली पाठ्यक्रमों में ऐतिहासिक पर्यटन का समावेश कर बच्चों में विरासत के प्रति रुचि पैदा की जा सकती है।

निष्कर्ष

भारत के ऐतिहासिक स्थल न केवल हमारी सांस्कृतिक धरोहर के जीवंत प्रतीक हैं, बल्कि पर्यटन उद्योग की रीढ़ भी हैं। इन स्थलों का संरक्षण और विकास न केवल आर्थिक दृष्टि से लाभकारी हैं, बल्कि यह भावी पीढ़ियों को अपनी जड़ों से जोड़ने को एक सशक्त माध्यम भी है। यदि इन स्थलों का सतत विकास, संरक्षण और प्रचार किया जाए तो भारत विश्व के प्रमुख सांस्कृतिक पर्यटन स्थलों में अग्रणी बन सकता है।